रामायण में वर्णित आभाजक (कहावतों) तथा लौकिक न्याय (मुहावरों) का समीक्षात्मक अध्ययन

लेखकः– डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी

प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
रघुवीर महाविद्यालय
रघुवीरनगर, थलोई, जौनपुर

रामायण आदि कवि वाल्मीकि की रसनियन्दिनी वाणी का विकास है, महाकवि की प्रतिभा का अखण्ड अमृतफल है। कविगण सहस्त्राब्दियों से न केवल इसका रसास्वादन करते चले आ रहें है अपितु इसकी रसभरित शैली और कथानक के सहारे काव्य नाटकों का निर्माण भी करते रहे और आज भी लेखनी का चमत्कार है। यह ग्रन्थ रत्न क्रौन्चवघ को देखकर शोक के कारण आन्दोलित हृदय वाल्मीकि का, काव्य के रुप में प्रथम उच्छवास है, भूतल पर कविता की सर्वप्रथम अवतारणा है। इसीलिए वाल्मीकि को आदिकवि तथा वाल्मीकि कृत रामायण को आदिकाव्य माना जाता है। कथा प्रसिद्व है कि महर्षि वाल्मीकि पूजा के लिए पुष्प चयन कर रहे थे। उनके समक्ष गंगा के सुरम्य तट पर क्रौन्चयुगल काम क्रीडा में निमग्न था। इसी बीच पेड़ की आड़ से व्याध ने पुरूष क्रौच्च को अपने प्राणघातक वाण का लक्ष्य बनाया। वाण लगते ही पुरूष क्रौन्च छटपटाते चिल्लाते संसार से विदा हुआ। क्रौन्ची षिर पटक–पटक कर रोने चिल्लाने लगी। महर्षि इस दृष्य को निर्निमेष दृष्टि से देख रहे थे। उनका हृदय करूणा से भर गया। इसी स्थिति में बरबष उनके मुख से निकल पड़ा।

मा निषाद प्रतिष्ठास्त्वमगमः शाश्वतीः समाः।[1] यत् क्रौन्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

अर्थात् हे निषाद, तुमने काम से मोहित इस क्रौन्च पक्षी को मारा है अतः तुम सर्वदा के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त न करो। महर्षि की कल्याणमयी इस वाणी को सुनकर स्वयं सृष्टिकर्ता ब्रह्मा उपस्थित हुए तथा रामचरित लिखने के लिए उनसे कहा। रामायण की रचना इसी प्रेरणा का सुखद फल है। महर्षि वाल्मीकि अनुष्टुप छन्द के आविष्कर्ता माने जाते है। यद्यपि उपनिषदों में भी अनुष्टुप छन्द का प्रयोग हैं परन्तु लौकिक संस्कृत में व्यवहृत होने वाले सम अक्षर से युक्त अनुष्टुप का प्रथम प्रयोग वाल्मीकि ने ही किया है।

जिस भाषा में रामायण की रचना हुई, वह लोकजीवन में सम्पृक्त थी। इसलिए इसमें पदे–पदे लोक प्रचलित कहावतों और मुहावरों का सुन्दर गुथॉव हुआ है। वाल्मीकि ने अपनी ऋषि दृष्टि से जीवन के मर्म का उद्धाटन किया है। अतः उनकी कविता में ऐसे सुभाषित या सुन्दर उक्तियाँ प्राप्त होती हैं। जो आज भी हमारे अन्तःकरण को आन्दोलित एवं मार्गदर्षित करती हैं। ऐसी उक्तियाँ शताब्दियों तक भारतीय जनमानस में स्थित रहेगी।

Scanned with CamScanner

यदि वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड का अध्ययन करें तो श्रीराम का वैष्णव धनुष को चढ़ाकर अमोध वाण के द्वारा परषुराम के तप प्राप्त पुण्यलोकों का नाष करना तथा परषुराम का महेन्द्र पर्वत को लौट जाने की कथा में स्पष्ट है कि – **त्वया त्रैलोक्यनाथेन यदहं विमुखीकृतः**।[2]

अर्थात् आपके सामने जो मेरी असमर्थता प्रकट हुई। यह मेरे लिए लज्जाजनक नहीं हो सकती, क्योंकि आप त्रिलोकीनाथ श्री हरि ने मुझे पराजित किया है।

इसी प्रकार अयोध्याकाण्ड में श्रीराम के सद्गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें न्याय पक्ष के समर्थन में वृहस्पति के समान एक से एक बढ़कर युक्तियाँ देते है। **उत्तरोत्तरयुक्तीनां वक्ता वाचस्पतिर्यथा।**[3]

वहीं पर श्रीराम अपने सद्गुणों के कारण प्रजाजनों को बाहर विचरने वाले प्राण की भाँति प्रिय हैं।

बहिश्चर इव प्राणो वभूव गुणतः प्रियः।[4]

अयोध्याकाण्ड में मन्थरा द्वारा कैकेयी को बताते हुए कहा जा रहा है कि कल्याणि! नदी का पानी निकल जाने पर उसके लिये बाँध नहीं बाँधा जाता (यदि राम का अभिषेक हो गया तो तुम्हारा वर माँगना व्यर्थ होगा। **गतोदके सेतुबन्धों न कल्याणि विधीयते।**[5]

अयोध्याकाण्ड में सुमन्त के द्वारा दषरथ के गुणों को बताते हुए कैकेयी को समझाना कि

यन्महेन्द्रमिवाजय्यं दुश्प्रकम्प्यमिवाचलम्। महोदधिमिवाक्षोभ्यं संतापयसि कर्मभिः।।[6]

वहीं पर सुमन्त कैकेयी को बताते है कि नारियों के लिए पति की इच्छा का महत्व करोड़ों पुत्रों से भी अधिक है। **भर्तुरिच्छा हि नारीणां पुत्रकोट्या विषिष्यते।**[7]

सुमन्त कैकेयी को कटु वचन कहते है कि ''भला आम को कुल्हाड़ी से काटकर उसकी जगह नीम का सेवन कौन करेगा ? जो आम की जगह नीम को ही दूध से सींचता है उसके लिये भी यह नीम मीठा फल देने वाला नहीं हो सकता (अतः वरदान के बहाने श्रीराम को वनवास देकर कैकेयी के चित्त को संतुष्ट करना राजा के लिए कभी सुखद परिणाम का जनक नहीं हो सकता।

आम्रं छित्त्वा कुठारेण निम्बं परिचरेत् तु कः। यश्चैनं पयया सिच्चेन्नैवास्य मधुरो भवेत्।[8]

इतना ही नहीं हे कैकेयी मै समझता हूँ कि तुम्हारी माता का अपने कुल के अनुरूप जैसा स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी है। लोक में कही जाने वाली यह कहावत सत्य ही है। कि नीम से मधु नहीं टपकता।– **न हि निम्बात् स्त्रवेत् क्षौद्रं लोके निगदितं वचः।**[9] पुनः सुमन्त कहते हैं कि आज मुझे यह लोकोक्ति सोलह आने सच मालूम होती है कि पुत्र पिता के समान होते हैं और कन्याएँ माता के समान – **सत्यश्चात्र प्रवादोऽयं लौकिकः प्रतिभाति मा। पितॄन् समनुजायन्ते नरा मातरमङॅना ।।**[10] अयोध्याकाण्ड के 36 वें सर्ग में हम लोग तो श्रीरामचन्द्र जी में कोई अवगुण नहीं देखते है जैसे (षुक्ल पक्ष की द्वितीया में) चन्द्रमा में मलिनता का दर्षन दुर्लभ है, उसी प्रकार इनमें कोई पाप या अपराध ढूढ़ने से भी नहीं मिल सकता । **दुर्लभो हयस्य निरयः षषाडस्येव कल्मशम्।**[11]

युद्धकाण्ड में इन्द्र को विभीषण ने फटकार लगाते हुए कहा कि तुम अत्यन्त दुर्बुद्वि, दुरात्मा और मूर्ख हो। इसीलिए बालकों की सी बे सिर पैर की बातें करते हों।

Scanned with CamScanner

मूर्ख स्त्वमत्यन्तसुदुर्भतिश्र त्वमिन्द्रजिद् वालत्या ब्रवीशि।[12]

महर्षि वाल्मीकि विवाहित लोगों के लिए पत्नी उनकी आत्मा के समान होती हैं ऐसा कहते हैं।

आत्मा हि दाराः सर्वेषां दारसङ्ः ग्रहवर्तिनाम्।

इतना ही नहीं अप्रिय और हितकर बात को कहने वाला और सुनने वाला दोनों कठिनाई से प्राप्त होते हैं । **अप्रियस्य च पष्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।**[13]

वाल्मीकि ने कहा कि पतिव्रताओं के आँसू धरती पर व्यर्थ नहीं गिरते ।

पतिव्रतानां नाश्रूणि वृथा पतन्ति भूतले।[14]

जिससे बालि मर कर गया, वह रास्ता सिकुड़ा नहीं है। यह कथन क्रुद्ध लक्ष्मण का सुग्रीव से है।

न स सकुचितः पन्था येन बाली हतो गतः।

इस प्रकार अनेक आभाजक एवं मुहावरों से सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण उसी प्रकार भरा पड़ा है जैसे समुद्र में रत्न। बस उन रत्नों को समेटना ही हम सब का कार्य है जो कि अत्यन्त दुर्लभ है। इन मुहावरों एवं कहावतों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वाल्मीकि जन सामान्य की भाषा का ही प्रयोग किये थे। तत्कालीन भाषा संस्कृत होना और वाल्मीकि द्वारा इतने सरल एवं सहज ढंग से रामायण की रचना यह रामायण की लोकप्रियता से ही ज्ञात हो जाता है। मैथलीशरण गुप्त का यह कथन अत्यधिक समीचीन है। कि– **राम तुम्हारा चरित स्वंय में काव्य है। कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है।।**

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u>

1 – बालकाण्ड – 2/15
2 – बालकाण्ड – 77/19
3 – अयोध्याकाण्ड – 2/17
4 – ,, – 2/19
5 – ,, – 9/54
6 – ,, – 35/7
7 – ,, – 35/8
8 – ,, – 35/16
9 – ,, – 35/17
10 – ,, – 35/28
11 – ,, – 36/27
12 – युद्धकाण्ड –16/12
13 – 3/35/2
14 – 6/11/67

Scanned with CamScanner